Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat
دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक 17.06.16 बैतुल फ़तूह लंदन।

रमज़ान में जबकि अधिकांश लोगों का ध्यान मस्जिद की ओर भी है अल्लाह तआला की कृपा से, और जमाअत के साथ नमाज़ अदा करने की ओर भी ध्यान है। इसके साथ नफ़लों की ओर भी ध्यान देना चाहिए इसके पश्चात वे दुआएँ जो दीन को दुनया पर प्राथमिकता देने तथा अल्लाह तआला की निकटता प्राप्त करने के लिए हैं, वे हमें प्राथमिकता से करनी चाहिएँ। पहली दुआएँ यही हैं, शेष दुआएँ सांसारिक दुआएँ, बाद में आनी चाहिएँ। हमारी सांसारिक आवश्यकताओं की दुआएँ तो फिर अल्लाह तआला स्वयं पूरी भी कर देता है।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने निम्नलिखित आयत तिलावत फ़रमाई-

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ

अनुवाद- और जब मेरे बन्दे तुझसे मेरे विषय में प्रश्न करें तो निःसन्देह मैं निकट हूँ। मैं दुआ करने वाले की दुआ का उत्तर देता हूँ, जब वह मुझे पुकारता है। अतः चाहिए कि वे भी मेरी बात पर लब्बैक (मैं उपस्थित हूँ) कहें और मुझ पर ईमान लाएँ ताकि वे हिदायत पाएँ।

यह आयत रोज़ा रखने के आदेश, इसकी शर्तें तथा इससे सम्बंधित निर्देशों के लगभग बीच में रखकर अल्लाह तआला ने रमज़ान और दुआओं की क़बूलियत के विशेष सम्बंध की ओर ध्यानाकर्षित किया है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ीअल्लाहु अन्हु ने इस सम्बंध को यूँ बयान फ़रमाया कि रोज़ा जैसे तक़्वा सीखने का माध्यम है वैसे ही अल्लाह के निकट होने का भी माध्यम है। अतः केवल रमज़ान का महीना दुआओं की क़बूलियत के कारण नहीं हो सकता जब तक कि उसे तक़्वा सीखने, तक़्वा का जीवन व्यतीत करने तथा अल्लाह की निकटता प्राप्ति का माध्यम बनाने का प्रयास न किया जाए और जब यह अवस्था होगी तो अल्लाह तआला से रमज़ान में पैदा किया हुआ सम्बंध केवल रमज़ान तक ही सीमित नहीं रहेगा बल्कि सदैव बदलाव के प्रभाव प्रकट होंगे। अल्लाह तआला ने भी इस आयत में यही बताया है कि मैं निकट हूँ। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इस महीने में शैतान जकड़ दिया जाता है और अल्लाह तआला निकट आ जाता है, परन्तु किन के निकट आता है? उनके जो अल्लाह तआला की निकटता का अनुभव करते हैं अथवा करना चाहते हैं तथा इसके लिए अल्लाह तआला की बात मानते हैं। अल्लाह तआला के आदेश فليستجيبوالی के अनुसार कार्य करने का प्रयास करते हैं, अल्लाह तआला के आदेशों का पता लगाते हैं तथा उनके अनुसार कर्म करने के लिए लब्बैक (मैं उपस्थित हूँ) कहते हैं। इस बात पर विश्वास एंव आस्था रखते हैं कि ख़ुदा तआला सर्वशक्तिमान है यदि मैं उसके आदेशानुसार कर्म करते हुए, उसके लिए विशुद्ध होते हुए उससे मांगूँगा तो वह मेरी दुआ सुनेगा।

अतः वे लोग जो यह कहते हैं कि हम दुआ करते हैं, दुआएँ क़बूल नहीं होतीं, वे आत्मनिरीक्षण भी करें कि कहाँ तक ख़ुदा तआला के आदेशानुसार कर्म हैं? यदि हमारे कर्म नहीं हैं, हमारा ईमान केवल औपचारिक है तो फिर हमारा यह कहना अनुचित है कि हमने अल्लाह तआला को पुकारा परन्तु हमारी दुआएँ क़बूल नहीं हुईं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस बात को बयान करते हुए कि ख़ुदा तआला ने क्या शर्तें रक्खी हैं, फ़रमाया कि पहली बात अल्लाह तआला ने यह बयान फ़रमाई है कि लोग ऐसी तक़्वा की अवस्था तथा ख़ुदा से प्रेम पैदा करें कि मैं उनकी आवाज़ सुनूँ। तक़्वा पैदा हो, ख़ुदा से डरें। ख़ुदा का भय हो तो फिर अल्लाह तआला आवाज़ को सुनता है। दूसरी बात यह कि मुझ पर ईमान लाएँ, कैसा ईमान? इस बात पर ईमान कि ख़ुदा मौजूद है और समस्त शक्तियाँ एंव सामर्थ्य रखता है। प्रोक्ष पर ईमान हो तो फिर अल्लाह तआला की ओर से ऐसा विवेक प्राप्त होगा जिसके द्वारा ख़ुदा तआला के अस्तित्व तथा उसके सर्वशक्तिमान होने, उसके दुआओं का उत्तर देने का अनुभव भी हो जाएगा। पहले इंसान को अपने ईमान को दृढ़ करना होगा फिर अल्लाह तआला क़दम बढ़ाता है और फिर प्रमाण भी उपलब्ध हो जाएगा। दुआओं की क़ुबूलियत की शर्तों, इसके सिद्धांतों तथा इसके दर्शन शास्त्र इत्यादि पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बड़े विस्तार पूर्वक विभिन्न अवसरों पर प्रकाश डाला है।

आप फ़रमाते हैं कि यह सत्य है कि जो व्यक्ति युक्तियों के द्वारा काम नहीं लेता वह दुआ नहीं करता बल्कि ख़ुदा की परीक्षा लेता है। इस लिए दुआ करने से पहले अपनी शक्तियों को प्रयोग में लाना अनिवार्य है और यही अर्थ इस दुआ का है। पहले अनिवार्य है कि इंसान अपनी आस्था एंव कर्मों पर दृष्टि डाले। क्यूँकि ख़ुदा तआला की आदत है कि सुधार के लिए साधन की आवश्यकता होती है। वह कोई न कोई ऐसा माध्यम पैदा कर देता है कि जो सुधार का कारण बन जाता है। वे लोग इस स्थान पर तनिक विचार करें जो कहते हैं कि जब दुआ हो गई तो साधन की क्या आवश्यकता है। वे नादान हैं, सोचें कि दुआ स्वयं अपने आप में एक गुप्त माध्यम है जो अन्य माध्यमों को पैदा कर देता है। फ़रमाया- और **इय्याका नअबुदु** की प्राथमिकता **इय्याका नस्तओन** पर जो दुआ का कलिमा है, इस बात को विशेष रूप से स्पष्ट कर रहा है। अतः अल्लाह की आदत हम यूँ ही देख रहे हैं कि वह साधन का प्रबन्ध कर देता है। देखो, प्यास बुझाने के लिए पानी और भूख मिटाने के लिए खाना उपलब्ध करता है परन्तु साधन के द्वारा। इस प्रकार यह साधनों का क्रम यूँ ही चलता है तथा साधन का प्रबन्ध अवश्य होता है। क्यूँकि ख़ुदा तआला के ये दो नाम ही हैं कि **कानल्लाहु अज़ीज़न हकीमा।** अज़ीज़ तो यह है कि प्रत्येक काम कर देना और हकीम यह है कि प्रत्येक काम किसी युक्ति से, समय एंव अवसर के अनुसार उचित रूप से कर देना। देखो, वनस्पति और खनिज पदार्थों में विभिन्न प्रकार की विशेषताएँ रक्खी हैं। तरबुद ही को देखो कि वह एक दो तोला तक दस्त ले आती है, ऐसा ही सक़मूनिया है। अल्लाह तआला इस बात का तो सामर्थ्य रखता था कि यूँ ही दस्त आ जाए अथवा पानी के बिना ही प्यास बुझ जाए। परन्तु क्यूँकि प्रकृति के गुप्त भेदों का ज्ञान देना भी आवश्यक था क्यूँकि जितनी जानकारी एंव प्राकृतिक भेदों का ज्ञान विस्तृत होता जाता है उतना ही इंसान अल्लाह तआला की विशेषताओं की जानकारी प्राप्त करके निकटता प्राप्त करने के योग्य हो जाता है।

आप फ़रमाते हैं कि मांगना इंसान की प्रवृत्ति है तथा सहायता करना अल्लाह तआला की, जो नहीं समझता और नहीं मानता वह झूठा है। बच्चे का उदाहरण जो मैंने दिया है वह दुआ की फ़लास्फ़ी का अच्छी प्रकार समाधान करके दिखाता है। रहमानियत और रहीमियत दो नहीं हैं। अतः जो एक को छोड़ कर दूसरी को चाहता है, उसे मिल नहीं सकता। रहमानियत के लिए यह अनिवार्य है कि वह हम में रहीमियत से लाभान्वित होने का सामर्थ्य पैदा करे। जो ऐसा नहीं करता वह वरदानों का इन्कारी है। इय्याका नअबुदु का यही अर्थ है कि हम तेरी इबादत करते हैं उन प्रत्यक्ष साधनों एंव माध्यमों के द्वारा जो तू ने प्रदान किए हैं। देखो, यह ज़बान जो रसायन और तंत्रिकाओं से बनाई है

यदि ऐसी न होती तो हम बोल न सकते। फ़रमाया कि ऐसी ज़बान दुआ के लिए प्रदान की जो मन के विचारों तक को प्रकट कर सके। यदि हम दुआ का काम ज़बान से कभी न लें तो यह हमारा दुर्भाग्य है। अनेक बीमारियाँ ऐसी हैं कि यदि वे ज़बान को लग जावें तो सहसा ही ज़बान अपना काम छोड़ बैठती है यहाँ तक कि इंसान गूँगा हो जाता है। अतः यह कैसी रहीमियत है कि हम को ज़बान दे रक्खी है। ऐसा ही कानों की बनावट में अन्तर आ जावे तो तनिक भी सुनाई न दे, ऐसा ही दिल की स्थिति है, वह ईश्वर के भय, विनम्रता एंव शिष्टाचार की अवस्था रक्खी है तथा सोचने एंव विचार करने की शक्तियाँ रक्खी हैं कि यदि बीमारी आ जावे तो वे लगभग सारी बेकार हो जाती हैं। पागल लोगों को देखो कि उनकी शक्तियाँ कैसी निरर्थक हो जाती हैं। तो क्या हमारे लिए यह अनिवार्य नहीं कि इन ईश्वरीय वरदानों को महत्व दें? यदि इन शक्तियों को जो अल्लाह तआला ने अपनी असीम कृपा से हम को प्रदान की हैं, बेकार छोड़ दें तो निःसन्देह हम वरदानों की अवहेलना करने वाले हैं। अतः याद रक्खो कि यदि अपनी शक्तियों एंव सामर्थ्यों को निरर्थक छोड़ कर दुआ करते हैं तो दुआ कुछ भी लाभ नहीं दे सकती। क्यूंकि जब हमने पहले वरदान से कुछ काम नहीं लिया तो दूसरे को कब अपने लिए उपयोगी तथा लाभप्रद बना सकेंगे।

दुआ एक ऐसी मन भावन अवस्था है कि मुझे खेद है कि मैं किन शब्दों में इस आनन्द एंव स्वाद को दुनया को समझाऊँ। यह तो अनुभव करने से ही ज्ञात होगा। सारांश यह है कि दुआ के अनिवार्य कार्यों में से प्रथम यह आवश्यक है कि शुभ कर्म एंव आस्था पैदा करें। क्यूँकि जो व्यक्ति अपनी आस्थाओं को दृढ़ नहीं करता तथा शुभ कर्मों से काम नहीं लेता और दुआ करता है, वह मानो ख़ुदा तआला की परीक्षा लेता है।

ख़ुदा तआला की सच्ची मुहब्बत को पाने के लिए इंसान को कैसा होना चाहिए जिसके परिणाम स्वरूप ख़ुदा तआला दुआएँ भी सुने तथा अपनी निकटता को प्रकट भी करे। इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद फ़रमाते हैं।

शर्त यही है प्रेम एंव निष्ठा ख़ुदा तआला के साथ ही हो। ख़ुदा की मुहब्बत ऐसी चीज़ है जो इंसान के पापी जीवन को जलाकर उसे एक नया और पवित्र इंसान बना देती है। उस समय वह, वह कुछ देखता है जो पहले नहीं देखता था और वह कुछ सुनता है जो पहले नहीं सुनता था। अतः ख़ुदा तआला ने जो सामग्री अपनी कृपा और दया की इंसान के लिए तय्यार की है, उसको प्राप्त करने तथा उससे लाभान्वित होने के लिए सामर्थ्य भी प्रदान किए हैं। उनके द्वारा यदि हम काम न लें और ख़ुदा तआला की ओर क़दम न उठाएँ तो कितनी सुस्ती, ढीलापन और ना-शुक्री है।

अल्लाह तआला की पहचान प्राप्ति के साधन क्या हैं, इसकी व्याख्या करते हुए आप फ़रमाते हैं कि यह सच्ची बात है कि خُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا मनुष्य दुर्बल प्राणी है, वह अल्लाह तआला की कृपा एंव दया के बिना कुछ भी नहीं कर सकता, फ़ज़्ल न हो तो इंसान कुछ नहीं कर सकता। उसका अस्तित्व तथा उसका पालन पोषण एंव स्थाईत्व का प्रबन्ध, सबके सब अल्लाह तआला की कृपा पर आधारित हैं। मूर्ख है वह इंसान जो अपनी बुद्धि तथा शक्ति और अपने धन दौलत पर गर्व करता है क्यूँकि यह सब कुछ अल्लाह तआला ही का वरदान है, वह कहाँ से लाया? और दुआ के लिए यह आवश्यक बात है कि इंसान अपनी दुर्बलता एंव असहाय होने का पूर्णतः विचार करे। ज्यूँ ज्यूँ वह अपनी दुर्बलता पर विचार करेगा उतना ही अपने आपको अल्लाह तआला की सहायता का मोहताज पाएगा और इस प्रकार दुआ के लिए उसके अन्दर एक जोश पैदा होगा। फ़रमाया- जैसे इंसान, जब कठिनाइयों में पड़ता है तथा दुःख या तंगी अनुभव करता है तो बड़े ज़ोर से पुकारता और चिल्लाता है और दूसरे से सहायता मांगता है। इसी प्रकार यदि वह अपनी दुर्बलताओं तथा ग़लतियों पर विचार करेगा और अपने आपको हर समय अल्लाह तआला की सहायता का मोहताज पाएगा तो उसकी आत्मा पूरे जोश एंव दर्द से व्याकुल होकर अल्लाह की चौखट पर गिरेगी और चिल्लाएगी और या रब्ब! या रब्ब! कह कर पुकारेगी।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः सबसे पहले हमें अपने दीन को बचाने की दुआ करनी चाहिए। जब इंसान यह करे तो फिर अल्लाह तआला की निकटता के द्वार खुलते हैं और फिर शेष दुआएँ अपने आप ही क़बूल होती चली जाती हैं। अल्लाह तआला ने अपनी निकटता एंव दुआ की क़बूलियत के जो मार्ग बताए हैं उनमें सबसे उत्तम साधन नमाज़ की अवस्था को बताया है। इस विषय में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि-

नमाज़ का वास्तविक उद्देश्य और सार दुआ ही है। और दुआ मांगना अल्लाह तआला के प्राकृतिक नियमानुसार है। उदाहरणतः हम देखते हैं जब बच्चा रोता धोता है तथा व्याकुलता प्रकट करता है तो माँ कितनी व्याकुल होकर उसको दूध देती है। अल्लाह और बन्दे में इसी प्रकार का एक सम्बंध है जिसको प्रत्येक व्यक्ति नहीं समझ सकता। जब इंसान अल्लाह तआला के द्वार पर गिर पड़ता है और बड़ी शिष्टता एंव विनम्रता के साथ उसके समक्ष अपनी प्रस्थितियों को पेश करता है और उससे अपनी आवश्यकताओं को मांगता है तो अल्लाह की दया को जोश आता है और ऐसे व्यक्ति पर दया की जाती है। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व करम का दूध भी एक प्रकार की पुकार को चाहता है। अल्लाह तआला की दया का दूध यदि पीना है, उसकी कृपा एंव दया से लाभान्वित होना है तो इसके लिए भी विनयता एंव विनम्रता, रोना और चिल्लाना होगा। फ़रमाया- इसके लिए उसके समक्ष रोने वाली आँख पेश करनी चाहिए।

अतः रमज़ान में जबकि अधिकांश लोगों का ध्यान मस्जिद की ओर भी है अल्लाह तआला की कृपा से, और जमाअत के साथ नमाज़ अदा करने की ओर भी ध्यान है। इसके साथ नफ़लों की ओर भी ध्यान देना चाहिए इसके पश्चात वे दुआएँ जो दीन को दुनया पर प्राथमिकता देने तथा अल्लाह तआला की निकटता प्राप्त करने के लिए हैं, वे हमें प्राथमिकता से करनी चाहिएँ। पहली दुआएँ यही हैं, शेष दुआएँ सांसारिक दुआएँ, बाद में आनी चाहिएँ। हमारी सांसारिक आवश्यकताओं की दुआएँ तो फिर अल्लाह तआला स्वयं पूरी भी कर देता है।

इस समय मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की एक दुआ भी पेश करता हूँ जिसे इन दिनों में हमें विशेष रूप से करना चाहिए ताकि अल्लाह तआला की निकटता प्राप्त हो। अल्लाह तआला के समक्ष आपने यह दुआ की थी कि-

ऐ रब्बुल आलमीन, तेरे उपकारों का मैं शुक्र अदा नहीं कर सकता, तू बड़ा ही दयालु एंव कृपालु है तथा तेरे उपकार मुझ पर अत्यधिक हैं। मेरे पापों को क्षमा कर दे ताकि मेरा विनाश न हो जाए, मेरे दिल में अपनी शुद्ध मुहब्बत डाल ताकि मुझे जीवन प्राप्त हो और मेरे पापों को छुपा ले तथा मेरे द्वारा ऐसे काम करा कि जिन के द्वारा तू प्रसन्न हो जाए। मैं तेरी ही दया के कारण इस बात की शरण चाहता हूँ कि तेरा प्रकोप मुझ पर न आवे। दया कर तथा दुनया एंव आख़िरत की दुविधाओं से मुझे बचा कि प्रत्येक दया एंव कृपा तेरे ही हाथ में है। आमीन, सुम्मा आमीन

अल्लाह तआला करे कि हम दुआओं के यथार्थ को समझने वाले हों। यह रमज़ान हमें उन लोगों में शामिल करे और फिर सदैव इस पर स्थापित रक्खे जो ख़ुदा तआला पर ईमान की दृष्टि से दृढ़ होते हैं। उसके आदेशों को सुनते तथा उनके अनुसार कर्म करते हैं और अपनी प्रत्येक बात पर अल्लाह तआला की प्रसन्नता को प्राथमिकता देते हैं। हमारे कर्म शुद्ध रूप से अल्लाह तआला की प्रसन्नता के अनुसार हों और हमारी आस्था में पहले बढ़कर व्यापकता आए। हम में अल्लाह तआला से सच्चा प्रेम पैदा हो, अल्लाह तआला हमें दुनया व आख़िरत की बलाओं से भी बचाए।